Shri Krishna Puja At Pratishthan

Date	:	10th August 2003
Place	:	Pune
Type	:	Puja
Speech Language	:	Hindi

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 05
English	-
Marathi	-

II Translation

English	06 - 09
Hindi	-
Marathi	10 - 11

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

हम लोगों को अब यह सोचना है कि सहजयोग तो बहुत फैल गया और किनारे किनारे पर भी लोग सहजयोग को बहुत मानते हैं। लेकिन जब तक हमारे अन्दर सहजयोग पूरी तरह से व्यवस्थित रूप से प्रकटित नहीं होगा तब तक जैसा लोग सहजयोग को मानते हैं मानेगें नहीं। इसलिए ज़रूरत है कि हम कोशिश करें कि अपने अन्दर झांकें। यही क ष्ण का चरित्र है कि हम अपने अन्दर झांके और देखें कि हमारे अन्दर खुद कौन सी, कौन सी ऐसी चीज़े हैं जो हमें दुविधा में डाल देती हैं। इसका पता लगाना चाहिए। हमें अपने तरफ देखना चाहिए, अपने अन्दर देखना चाहिए और वो कोई कठिन बात नहीं है। जब हम अपनी शक्ल देखना चाहते हैं तो हम शीशे में देखते हैं। उसी प्रकार जब हमें अपनी आत्मा के दर्शन करने होते हैं तो हमें देखना चाहिए कि हमारे अन्दर वो कैसे देखा जाता है। बहुत से सहजयोगियों ने कहा माँ यह कैसे देखा जाएगा कि हमारे अन्दर क्या है, और हम कैसे हैं? उसके लिए ज़रूरी है कि मनुष्य पहले स्वयं ही बहुत नम्र हो जाए क्योंकि अगर आपमें नम्रता नहीं होगी तो आप अपने ही विचार लेकर बैठे रहेंगे। तो क ष्ण के जीवन में पहले दिखाया गया कि एक छोटे लड़के के जैसे वो थे। बिलकुल जैसा शिशु होता है, बिलकुल ही अज्ञानी, वैसे वो थे। वो अपने को कुछ समझते नहीं थे। अपनी माँ के सहारे वो बढ़ना चाहते थे। इसी प्रकार आप लोगों को भी अपने अन्दर देखते वक्त यह सोचना चाहिए कि हम एक शिशु बालक हैं। क ष्ण ने बार बार कहा, लेकिन जीसस क्राइसट ने भी कहा हम एक छोटे बालक बनें। बालक की जो सुबोध स्वभाव की छाया है वो हमको दिखनी चाहिए कि हम क्या बालक जैसी बाते करते हैं? हमारे अन्दर कौन सा ऐसा गुण है कि हम बालक बन जाते हैं। बालक यानि अबोधिता, भोलापन और उस भोलेपन से हमें अपने अन्दर देखना चाहिए और उसी से अपने को ढकना है। अब वो भोलापन बड़ा प्यारा होता है। आप अगर, आप बच्चों को देखें उनसे जो प्यार करते हैं वो इसलिए कि वो भोले हैं। वो चालाकी नहीं जानते, अपना महत्व नहीं जानते, कुछ भी नहीं जानते। क्या जानते हैं? वो जानते यह हैं कि सब कोई लोग हमारे हैं। ये हमारे भाई बहन और सब कुछ हैं। लेकिन ये किस तरह से उन्होंने जाना, यह प्रश्न है। बच्चों ने जिस तरह से जाना उसी तरह से हमने भी भुला दिया कि हम भी एक भोले बालक हैं और एक भोलापन हमारे अन्दर है। बहुत से सहजयोगी ऐसे हैं जो आते हैं वो बहुत कपट चालाकी दिखाने। कोई आते हैं और सोचते हैं कि हम बहुत होशियार हैं। कोई आते हैं और सोचते है कि हम माँ को सिद्ध कर देंगे। मुझे सिद्ध करने से क्या फायदा। मुझे तो मालूम ही है सब कुछ। तो आपको यह करना चाहिए कि अपनी ओर नज़र करें। और अपने भोलेपन को पहचानें। वो कहाँ है, कैसा है, और बड़ा मजेदार है ऐसा सोचना चाहिए। अब क ष्ण की जो बात है वो यही है कि बचपन में तो वो एकदम भोले थे और बड़े होने पर उन्होंने गीता समझाई जो बहुत गहन है। ये कैसे हुआ कि मनुष्य उसमें बढ़ गया। इसी प्रकार हम भी सहज में बढ़ सकते हैं।

हमने पाया है लेकिन उसमें अभी तक हम बढ़े नहीं। और बढ़ने के लिए चाहिए कि अपने बारे में जो ख्यालात हैं उसको छोड़ दें। पहले तो बच्चे जैसा स्वभाव होना चाहिए। अब ऐसा किसी को कहें कि बच्चे जैसा स्वभाव बनाओ तो बहुत ही कठिन बात है। ऐसा तो नहीं कर सकते कि जो है उसे छोड़ कर आप बच्चे बन जाओ। लेकिन बच्चों के

साथ रहकर, बच्चों के प्रति एक आस्था रखकर, उनकी बातों को देखकर आप बहुत फर्क कर सकते हैं, और बदल सकते हैं सारी चीज़ें अपने अन्दर की। तो सबसे पहले तो जानना चाहिए कि हमारे अन्दर जैसे जैसे हम बड़े होने लगे बहुत से दोष समा गए हैं। उन दोषों को कैसे निकालना चाहिए? कैसे–कैसे दोष हमारे अन्दर आए हैं। इसको अगर हम सोचें नहीं और उधर ध्यान दें तो हम उसको ठीक कर सकते हैं। ध्यान ऐसे देना है कि जैसे हम किसी से ज़ोर, घ ष्टता से बात करें या हम किसी की ताड़ना करना चाहते हैं या हम सोचते रहते हैं कि दूसरे आदमी को हम कैसे ठीक करें। **जब हमारा चित्त दूसरों पर जाता है तभी हम अपने से अलग हट जाते हैं। क्योंकि हमें खुद ठीक होना है इसलिए दूसरों के बारे में सोचने से क्या फायदा?** तो सबसे पहले हमे अपने बारे में ही द ष्टिपात करना चाहिए, देखना चाहिए। पर वो सब हो रहा है और वो बताया हमने। वो तो सहजयोगियों में घटित भी हो रहा है। क्योंकि अन्दर यह कुण्डलिनी जाग त होती है और वो सब रास्तों में दिखा देती है। अब रही बात यह कि हम किस तरह से जो मलिनता है उसको ठीक करे। पहली तो बात यह है कि दूसरों के दोष देखने की जो हमारी द ष्टि है उसको बदल दें, क्योंकि वही दोष हमारे अन्दर भी हैं। तो दूसरों के दोष देखने से पहले हमारे अन्दर क्या दोष हैं यह देखना चाहिए।•अगर यह देखना हमें आ जाए तो बहुत कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा। कोई साधु सन्तों का क्या है कि वो अपने अन्दर के ही दोष देखते हैं और अपने ही को सोचते हैं कि ऐसे क्यों हो गए हम? ऐसी कड़वी बात हम क्यों कहते है। ऐसी झूठी बात क्यों कहते हैं? तो ये अपने को देखने का एक प्रवाह है। ज़्यादातर हम उसको मानते नहीं हैं और उस प्रवाह में बहते नहीं है। हम अपने को उससे अलग समझते हैं पर ऐसी बात नहीं है। अगर हम समझ लें कि हमारे अन्दर जो यह प्रवाह है, जो हमें ऐसे रास्ते पर ले जाता है कि जहां हम अपने ही को नहीं पहचान सकते तो फिर आदमी अन्दर की तरफ मुड़ सकता है। अब कहने से कि तुम अन्दर की तरफ जाओ, ध्यान करो, अपने अन्दर की बहुत सी बातें निकालो, सब कहने को तो कह देंगे पर उससे नहीं होगा। इसलिए प्यार करने में प्रयत्नशील रहना चाहिए। और हमारे पास ऐसे साधन हैं जैसे क ष्ण का ध्यान करना। क ष्ण के ध्यान से हमारे अन्दर की सफाई हो जाती है। पर हम उल्टे हैं और क ष्ण के ध्यान में, हम यह सोचते हैं कि हम दूसरों के दोष देखते हैं। जब हम क ष्ण का दोष देखते है तो हमें दिखाई देता है पर हमें अपना दोष नहीं दिखाई देता। यह हमारे साथ बहुत ज़्यादती है कि हम अपने दोष नहीं देख सकते। क ष्ण के दोष तो देख लेंगे। बहुत से लोग हैं, मैंने देखा है कि किताबें लिखी हैं उन्होंने कि क ष्ण में क्या क्या दोष थे। क्या गलत कार्य किए? उनको कैसे रहना चाहिए था? अपने बारे में वो नहीं जानते। लेकिन जब अपने बारे में भी सोचते हैं और जब देखा जाता है, तो कभी भी यह द ष्टि नहीं होती कि हमारे अन्दर यह दोष है और यह चला जाना चाहिए। तो हम दूसरों के दोषों पर जाकर अटक जाते हैं। यही हमको करना है कि अपने अन्दर क्या दोष है उसे देखा जाए। क ष्ण से बढ़कर मैं कोई योगी मानती नहीं हूँ क्योंकि उन्होंने यह रास्ता बताया कि तुम अपने अन्दर की गलतियाँ देखो। अपने अन्दर के दोष देखो। यह बहुत बड़ी बात है। उन्होंने सिर्फ कह दिया और करने वाले बहुत कम हैं। अगर दूसरों के दोष देख लीजिए तो सबको याद है। सबको मालूम है। अपने दोष बहुत कम लोगों को समझ में आते हैं। इसलिए वो ठीक

नहीं हो पाते। अपने दोषों से परिचित होना चाहिए। हंसना चाहिए अपने ऊपर कि हम क्या दोष कर रहे हैं। हमारे अन्दर क्या दोष है। ये हमे सोचना चाहिए। बजाय इसके कि हम और लोगों के दोष देखें।

तो होता क्या है कि चित्त हमारे ऊपर नहीं रहता। दूसरों के दोषों पर जाता है और उससे विचलित हो जाते हैं हम लोग और समझ नहीं पाते कि अरे ये तो हमारे ही दोष थे। हम क्यों दूसरों के दोष देख रहे थे। उससे क्या हमारे दोष ठीक हो जाएंगे? बिलकुल नहीं हो सकते। धीरे धीरे जब यह बात समझ में आ जाएगी तो मनुष्य दूसरों के दोषों पर लक्षित नहीं होगा। अपने ही दोषों को देखकर हैरान होगा कि हमने कितने सारे ये राक्षस पाल रखे हैं अपने अन्दर। हमारे मन के अन्दर कितनी कितनी गन्दी बातें हम सोचते रहते हैं। जब यह सफाई शुरु होती है तो मनुष्य विशेष रूप धारण करता है। और वह रूप ये है कि उसके अन्दर शक्तियाँ आ जाती हैं और उस शक्ति से वह अनेक कार्य कर सकता है। इसलिए नहीं कि उसका अहंकार बढ़े पर इसलिए कि उसकी सफाई होगी। अगर उससे सफाई हो गयी तो अपनी सफाई का काम हो गया। तो दोष देखने से हम अपनी सफाई करते हैं और उन दोषों को छोड़ देते हैं। पर यह कैसे हो, क्योंकि दोष देखना तो मुश्किल नहीं है, पर उससे छूटना मुश्किल है। इसलिए उसका देखना जो है वो सूक्ष्म होना चाहिए और बारीक होना चाहिए और उस तरफ नज़र जानी चाहिए। उससे बहुत कुछ सफाई हो जाएगी। आज का जो पर्व है उसमें श्री क ष्ण का जो संदेश है वह यह है कि आप अपने अन्दर झाँको। और देखो। यह श्री क ष्ण ने कहा है। पर वो करना लोगों को मुश्किल लगता है। वो होता नहीं है। घटित नहीं होता। उसकी क्या वजह है? क्यों हम अपने को नहीं देख पाते? बीच में पर्दा क्या है? पर्दा यही कि अहंकार आदि जो दुर्गुण हैं वो खड़े हो जाते हैं और उन दोषों को हम देख नहीं पाते। जिनको देखना चाहिए। यह बहुत ज़रूरी चीज़ है। आपने आज की पूजा रखी, मैं बहुत खुश हो गई कि क ष्ण की पूजा हो जाएगी तो अन्दर से बहुत से लोग साफ हो जाएंगे। क्योंकि यह क ष्ण का कार्य है। वो खुद ही इसे करेंगे। पर अगर आप उधर रुचि दिखाएं कि आप चाहते हैं कि आपकी पूरी तरह से सफाई हो जाए। आप जानते नहीं कि कितना गहन हमारे यहाँ का यह प्रश्न है। इस प्रश्न को ठीक करने के लिए बड़ी मेहनत करनी पड़ी। लोग पहले तो सब कुछ करते थे, गुरु के आदेशों पर बहुत कुछ करते थे बेचारे, पर गहनता नहीं आती थी। अब आप तो सहजयोगी हैं आपके लिए मुश्किल नहीं होनी चाहिए। तो मैं यही कहूंगी कि अपने अन्दर झाँकना सीखिये। बड़ा मज़ा आएगा। अभी तक तो ठीक थे पर अभी पता नहीं क्यों इस तरह से करने लग गए। आप अपनी तरफ नज़र करिये। ये कैसा चलता है मामला। तो बड़ा मज़ा आएगा। आप देखकर हसेंगे और कहेंगे वाह क्या कहने। फिर एक तरह का भोलापन आपके अन्दर जागेगा। यही क ष्ण की बाल लीला है। जब यह भोलेपन से आप साफ होंगे, इसी से नहा लेंगे तो आपकी नजर बहुत Steady हो जाएगी। अपने आप अपने को आप समझने लगेंगे। असल में दोष हमारे ही अन्दर हैं। दूसरों के दोष देखने से हमारे कैसे ठीक होंगे? एक सादा सा प्रश्न है–अगर हमारी साड़ी पर कुछ गिरा है कि और हम इसे हटाते नहीं और दूसरों को बुरा कहते चले जाएंगे तो इतनी अकल तो है हमारे पास। पर वो अकल हम इस्तेमाल नहीं करते। किसी को समझ में अगर बात न आई

हो तो वो प्रश्न पूछ सकते हैं।

चित्त अन्दर जाता है। अब देखिए अपना चित्त जा रहा हैं अन्दर, पर हम डरते ही रहते हैं। पर अब अपने आप होना चाहिए। चित्त को आदत हो जाएगी कि वो आप अन्दर जाएगा।

मैं जानती हूँ कि आप लोगों के खूब प्रश्न हैं, खूब उलझने हैं इसमें कोई शक नहीं। लेकिन वो बहुत क्षुद्र हैं, उसका कोई अर्थ नहीं लगता। उससे उपर उठने की बात होती है हमेशा, पर लोग कहते है कि माँ कैसे उठा जाए। ध्यान से। ध्यान में आप अपने ऊपर ध्यान करते हैं। अपने ही को देखना है कि आपका दिमाग कहाँ चल रहा है? अब कहाँ घूम रहा है? धीरे–धीरे आपकी सफाई हो जाएगी। आज का दिन वैसे ही बड़ा महत्वपूर्ण है कि श्री क ष्ण का अवतार जो है इसने बहुत हमारी सफाई की है और बड़ी मदद की है। उनके आने से बहुत फर्क हो गया है। और कुण्डलिनी के जागरण में मैं देखती हूँ, क ष्ण के आशीर्वाद से बहुत सुन्दर चल रहा है। आप लोग जरा अपनी ओर ध्यान दें। एक तो अपने से नाराज नहीं होना और दूसरों से नाराज़ नहीं होना। बड़ा आनन्द आएगा। यही क ष्ण की पूजा है।

ENGLISH TRANSLATION

(Hindi Talk)

Now we have to realize that Sahaja Yoga has spread a lot and in all corners of the world people respect Sahaja Yoga, but until and unless Sahaja Yoga is completely manifested within us, the people who respect Sahaja Yoga will not continue to do so. That is why it is essential that we look inside of us. The nature of Shri Krishna is that we look inside of us and see what are the things that put us in trouble. We should find that out. We should look towards ourselves, within ourselves and that is not such a difficult thing. When we want to see our face, we look in the mirror. Similarly, when we need to see our spirit, we should find out how to see it within us. Many Sahaja Yogis have asked Me, "Mother, how do we see what is within us and how we are doing?." For that it is necessary that we ourselves should become very humble. If we lack humility, we will be clouded by our own thoughts.

So in the life of Shri Krishna, first it was shown that he was just like a small child. Absolutely like an infant. Not knowing anything. He did not think anything of himself. He had his mother and he wanted to grow with the support of his mother. We should also look inside of ourselves and realize that we are like a small child as well. Shri Krishna has said this repeatedly. Also, Jesus Christ has said the same thing that we should become like small children. We should see the comforting shade of the sweet nature of a child. Do we talk like a child? What is the quality within us that we become like a child? Now child means purity, innocence. With this innocence we have to look towards ourselves and cover ourselves with it. This innocence is very lovable. If you look at children and the love you feel towards them is because they are innocent. They don't know cleverness; don't feel their importance, nothing at all. What do they know? They know that all these people are related to us. They are our brothers, sisters and everything. But how do they know this. That is the question. In the same way that these children know, we have forgotten that we are like an innocent child and that we have innocence within us.

There are many Sahaja Yogis who come and think that they will show their cleverness and prove themselves to Mother. What is the need to prove anything to Me? I already know everything. So what you should do is look towards yourself and recognize your innocence. Where is it and how is it doing? And we should think how joyful it is. Now the thing about Shri Krishna is this only. He was absolutely simple as a child and when He grew up He explained The Gita, which is very deep. How did it happen that the human beings grew in it? In the same way we can grow in Sahaja Yoga. We have found it but still have not progressed in it. And to progress we need to leave the bad things behind.

First of all we need to have a childlike temperament. Now if we say to somebody that you should become childlike, it is a very difficult thing to do. We cannot just leave whatever we are and become childlike. But living with children, having respect for them, listening to how they talk, can make a big difference and we change all the things within us. So first of all we have to know that within us, as we grew up, a lot of bad things have gone in. How should we remove those bad things? What are the kinds of bad things that have gotten into us? If we think about it and put attention on it, then we can correct it. We have to put attention on things like, when we talk to somebody aggressively, or we want to scold someone or we keep thinking about how to correct somebody else. When our attention goes on other people then we get removed from our own self, because we have to ourselves be all right. That is why it is no use thinking about other people. So, first of all we should look at ourselves only, we should see ourselves. But all of that is happening, I have told about it and it is happening in Sahaja Yogis, because inside the kundalini awakens and shows all the paths. Now the remaining thing is the dirt that is within, how to fix that.

First and foremost the way we look at the defects of others should be changed because the same

defects exist within us also. So instead of looking at the defects of others, we should see what are the defects within us. If we can learn to see this, then a lot of things would become all right automatically. The thing with saints and sages is that they see their own defects and they think about how they became like that. They think, "Why do I say such harsh things? Why do I lie like this?" So this is a flow of watching oneself. Most of the time we do not flow with that. We think we are separate from that. But it is not like that. If we understand that there is this flow within us that takes us to such paths where we cannot even recognize ourselves, then a human being can turn inwards.

Now just to say that you go within yourself, meditate, take out these things from within, is very easy. But that will not do. That is why we have to meditate and constantly work towards it. And we have ways that we know. Like to meditate on Shri Krishna. By meditating on Shri Krishna we get cleansed from within. But when we meditate on Shri Krishna we think about the defects of others. If we want to look at the defects of Shri Krishna we can see that also, but we cannot see our own defects. This is too much that we cannot see our own defects but are able to see the defects of Shri Krishna. I have seen a lot of people who have written books about what were the defects in Shri Krishna. What wrong things did he do? How he should have lived? And they don't know about themselves. But even when they think about themselves, and look at themselves, it is never in a way that this defect exists within and it should go away. They can keep on discussing about the defects of others. The only thing we have to see is what are the defects that we have within ourselves.

I do not believe that there is a greater yogi than Shri Krishna, because he showed us the way to look at the mistakes within ourselves, the defects within ourselves. This is a very big thing. He said it, but people who actually do it are very less in number. Mostly we look at the defects of others, because everyone remembers them, everyone knows them. But very few people are able to understand their own defects. That is why those people will never be all right. We have to be familiar with our own defects and laugh at ourselves and think that "look at me, what kind of defects I am having within myself". We should think about this.

This attention is never on the self but on the defects of others. This causes us to be unsettled and we fail to understand that these are our own defects. Why are we looking at the defects of others? By doing this, is it going to fix our defects? They can never be fixed like this. Slowly, as this point is understood, man will stop focusing on the defects of others. Looking at his own defects will amaze him and realizing how many devils he has harbored within himself. Within our mind we keep thinking such dirty things.

When this cleansing starts, man, in a way, assumes a special form. He gets special powers and with those powers he can do many things. This happens not to boost his ego, but so that he gets cleansed. When we start getting cleansed like this, we have achieved our goal. Therefore, by looking at our own defects, we start cleansing ourselves and leave the defects behind. Now how to do this? Because, seeing the defect is not a hard thing, but to let go of it, is the hard part. That is why the way to see the defect has to be subtle and minute, and our attention should be towards it. A lot can be cleansed like this.

The message of today's festival is that we should look within ourselves and see. This is what Shri Krishna has said. But people find this hard to do. It doesn't happen. What is the reason that we are not able to see ourselves? What is this veil in between? The veil is of bad things like ego etc. They stand up and we are unable to see the defects that we should see. To see these defects is very essential. I am very happy that you kept today's puja. Shri Krishna's puja will take place and a lot of people will get cleansed from within because this is a special blessing of Shri Krishna. He will do it Himself, but you have to show a little interest, an inclination that you want to be completely cleansed from within. You don't know how profound this question is. To fix this we have to work very hard.

Earlier, people would do many physical exercises; listen to the orders of their guru. They would do a lot of things but they would never achieve the depth. But you are Sahaja Yogis. It should not be difficult for you. So now I will only say that you should learn to look into yourselves. It will be a lot of

fun. Till now, it is alright, but I do not know what you have started doing. You keep a watch on yourself. You will see how this whole thing works and you will be enjoying it and start laughing at yourself and exclaim 'what to say?' When this happens, you will start manifesting innocence within you. This is the Bala Leela *(Childlike playfulness)* of Shri Krishna.

Once you get bathed in this innocence your eyes will become very steady. On your own you will start understanding yourself. Actually, the defect lies within us only. Looking at the defects of others, how can we fix our own defects? A very simple straightforward question is “If something falls on our sari and we do not remove it, and if we abuse or blame someone else, it won't just go away, will it? This much intelligence we all have. But we don't use that intelligence. And for this you should all use this intelligence.

If anyone has not understood this you can ask questions, in Marathi also. At least you should ask some questions. Now see, the attention is going inside and we are pushing it farther but it should happen spontaneously. The attention should have the habit of going inwards by itself. I know that you have many questions to ask. We have a lot of confusion within us, there is no doubt about it. But the questions are very subtle. There is no end to it. Always, there is a question of rising above all this. Now, people say, 'Mother, how can we rise above all this?' Meditation. What to say about meditation? You have to meditate on your own selves. You have to see your own selves, that, where is your brain going? And where are you going? Slowly you will get cleansed.

Today is of great importance. The incarnation of Shri Krishna has done a great deal of cleansing for us and He has helped us a lot. His coming on the earth made a lot of difference. The awakening of Kundalini has also gone smoothly on account of His blessings. Please try to look at yourselves. You should not be annoyed with yourselves and you should not be annoyed with others either. It will be very joyous. This is the Krishna Puja. If you have any other questions, alright, you can ask Me…. What to say….

Comment from Sahaja Yogi: Everyone is in nirvichar.

Shri Mataji: Any other questions?……. What's the question?……

Sahaja Yogi: Everyone is sitting in nirvichar.

Shri Mataji: Come closer.

Sahaja Yogi: How do you attain nirchvichar(thoughtlessness) in meditation?

Shri Mataji: In meditation? There is no vichar *(thoughts)* during meditation. Why should thoughts come in meditation? You are not to seek anything during meditation. It is only to be felt within. It is you who have to discriminate whether you have realised this or not during meditation. In meditation, first you will come to know your own mistakes, where you were wrong, and where you were right. When you start realising your own mistakes, then you are on the right track. When you look at yourself in the mirror, you see yourself. What is the use of seeing others? The trouble with us is, we always like to see others in the mirror. Then how will you identify your own faults if you start to see others in the mirror?

Sahaja Yogi: How do we protect ourselves from the clutches of the false gurus?

Shri Mataji: Why did you have to go to a false guru? *(Shri Mataji laughs)*You tell me first, why did you go to a false guru? What attracted you to go to the false guru? How did you go there? You must ask yourself this first. Then you will realise that you ignored the evils of that false guru. That is what you didn't protect yourself from. Now, in the past I have already given lectures on false gurus where I have clearly talked about their evildoings and how they take one for a ride. It is their business to entrap you all. There are different types of business which they adopt. Out of that, gurus also have a business to entrap you and you are trapped. From this, one must realise which trap we have fallen into. We have filled our brains with the badhas *(negativities)* of the false gurus. Now if you can tell me any of those badhas, then I can tell you…..

Shri Mataji: Now if you know one or two of these badhas, you let me know. The false gurus' badhas. Now what do these badhas actually do? First they focus their attention on your pocket. *(laughter)*Isn't it? As they start doing this, then you must understand that their intentions are different. But it is all on the gross level. On the subtler level, in fact, there are many who wouldn't want to entrap you, but they would try to project their own imortance. And for this reason they become gurus. It is like this, that one projects his importance. So you must watch all this and be critical about it. Then it will forsake you. But most of the people absorb their badhas, their ego, their anger, their physical health and many more aspects that you absorb from the guru. Like these gurus, when they fall sick, their shadow starts reflecting within you.

For this reason, you must analyse yourself and look at yourself, that, what have I received from this guru? This is very important. Then when there is a cleansing of yourself, you will see that it benefits you to a great extent. Why did you go to a guru when you were seeking for your own spiritual ascent? You went to a guru to know him but you were in turn entrapped. This guru is such a guru,and you yourself should know how to protect yourself from him. You should stay away from them. I had been to many such gurus just to see them and what they do, and how they tempt and attract people. And with what they entrap people.

So the first thing I saw was that these people find your own weaknesses, that what weakness you have. If this doesn't work then they put badhas into you. The badhas are of various types. Out of these badhas you must first learn to detect what type of badhas he has put into you that you are unable to get rid of. The greatest badha that they put into you is FEAR. It keeps on frightening you, that 'if you leave me, such and such thing will happen to you.' This type of fear creeps within you. It doesn't have much strength in it. But it keeps on frightening you. When this fear comes,you must say to it, 'yes, I know it'. With this fear the human beings keep on going round and round the guru. For that Shri Krishna is there, Who drives out this fear from everyone. Is it over, or do you have any other questions?

Sahaja Yogi: Everyone is in nirvichar *(thoughtlessness)*

Shri Mataji: Saying that everyone is in vichar *(thoughts)* now we have to go beyond vichar *(thoughts)*.

Sahaja Yogi reaffirms: No Mother it's nirvichar *(thoughtlessness)*

Shri Mataji: Nirvichar. How did that happen? You have organised such a nice puja that I also keep wondering. How is the environment? Is it OK?…Yes, it is peaceful and calm….. peaceful…..Now better.

A person who can witness himself laughing, that is perfect. One who laughs at others, his attention is in another direction. Again, one who can witness and laugh at himself, and his own environment and aspect, he is perfect. Endless blessings.

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahiri

श्रीकृष्ण पूजा

प.पू.श्रीमाताजी निर्मलादेवींचे भाषण,
प्रतिष्ठान, पुणे दि.१० ऑगस्ट २००३

नमस्कार,

आपण सर्वांनी विचार करण्यासारखी गोष्ट म्हणजे सहजयोग आतां बराच पसरत असला तरी जोपर्यंत आपल्यामधून सहजयोग व्यवस्थित तऱ्हेनें व पूर्णपणें परावर्तित होणार नाहीं तोपर्यंत त्याला लोकांची मनापासून मान्यता मिळणार नाहीं. त्यासाठीं आपल्याला स्वत:कडे नीट पाहण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे. श्रीकृष्णांची हीच शिकवण आहे की आपण आपल्यामधेंच द्विधा मन:स्थिति निर्माण करणाऱ्या काय काय कमतरता आहेत हे बघितले पाहिजे; त्यासाठी आपलेच अंतरंग तपासून, स्वत:कडे प्रामाणिकपणे पाहून शोध घेण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे.

स्वत:च्या अंतरंगात डोकावणे कठीण नाहीं. एरवी स्वत:ला पाहण्यासाठी आपण आरशासमोर येऊन पाहतो. त्याचप्रमाणें आपल्या आत्म्याचे दर्शन करण्यासाठीं आपल्यामधें तो कसा दिसतो हे पाहिले पाहिजे. पुष्कळ लोक म्हणतात की हे कसे समजायचे? त्यासाठीं आपण स्वत:शीच खूप नम्र झाले पाहिजे; नम्रता नसेल तर तुम्ही तुमच्याच पूर्वगृहीत विचारांमधून पहात बसता. श्रीकृष्णांच्या जीवनांतून हे दिसून येते की लहानपणीं त्यांनी गुरु-आश्रमांत राहून विद्या संपादन केली; नंतर आईच्या आज्ञेनुसार वागत गेले. त्याचप्रमाणे आपण प्रत्येकाने स्वत:ला एक बालक समजून रहावे. श्रीकृष्णांनी अनेक वेळा लोकांना सांगितले की लहान मुलासारखे सुबोध स्वभावाचे आपण बनले पाहिजे, आपल्यामधें बालकाचे गुण असले पाहिजेत. लहान मूल म्हणजे अबोध, निष्पाप, भोळेपणा; हा भोळेपणा प्रेमाचेच रुप आहे व तेच आपल्यामधून प्रकट झाले पाहिजे.

स्वत:ला आत्मपरीक्षणामधून सतत तपासत रहा व बोध घ्या.

म्हणूनच लहान मुले सगळ्यांना आवडतात; त्यांच्या वागण्यांत चलाखी, स्वत:चे महत्व दाखवणें हे प्रकार नसतात. त्यांना सगळेच लोक आवडतात,भाऊ-बहीण, लहान-मोठा असले भेदभाव त्यांच्याजवळ नसतात. श्रीकृष्ण समजणे म्हणजे सगळे व्यवहार बालकासारखे होणें. सहजयोगामधेंही कांही लोक चलाखी करतात, कुणी स्वत:ला फार हुशार समजतात, कुणाला वाटते की आपणच श्रीमाताजींच्या अधिक जवळचे आहोत वगैरे.

म्हणून तुम्हाला जरुरीची गोष्ट म्हणजे आधी स्वत:कडे पहा व स्वत:ला प्रामाणिकपणें तपासा; अमका कोण आहे, तमका कसा आहे असल्या फालतू गोष्टी मनांत आणूं नका. श्रीकृष्णांनी लहानपणापासून त्यांच्या भोळेपणाच्या लीला दाखवल्या व मोठेपणीं गहन गीता-तत्त्वज्ञान सांगितले. त्याचप्रमाणें सहजयोग मिळाल्यावर तुम्हाला त्यामधें प्रगल्भ झाले पाहिजे. प्रगल्भ बनण्यासाठी स्वत:बद्दलच्या स्वत:च्याच सर्व कल्पना (खयालात)आधीं टाकून दिल्या पाहिजेत आणि

बालकासारखे बनले पाहिजे. बऱ्याच लोकांना वाटतें कीं आपण जसे आहोत ते विसरुन लहान मुलासारखे कसे होणार? पण लहान मुलांमधें राहिल्यावर त्यांच्याबद्दल एक प्रकारची आस्था आपल्या मनांत निर्माण होते. त्यांचे वागडणें, बोलणें-चालणे पाहिल्यावर तुमच्यातही सूक्ष्म बदल होतो.

सर्वप्रथम स्वत:च्या अंतरंगात डोकावून स्वत:कडे नीट पाहून, आपल्या मधील दोष नीट जाणून ते दूर करण्याचा प्रयत्न आपण केला पाहिजे. आपले दोष आपल्याला नीट लक्षांत आले तरच आपण ते ठीक करु शकतो व सुधारु शकतो. म्हणून आपल्यावरच ध्यान झाले पाहिजे; आपण उगीच कुणाशी कठोरपणें वागलो का, उगीचच कुणाला रागावून बोललो का असे बघत रहा. दुसरा तसा वागला असेल तर त्याला दोष देण्यांत काय फायदा? आपले चित्त स्वत:वर न लावता सतत दुसऱ्याच्या दोषांकडे गेले तर ते विचलित होणारच. म्हणून स्वत:कडेच पाहणें जरुरीचे आहे. कुण्डलिनी जागरणानंतर हे सर्व प्रकाशांत आले पाहिजे व स्वत:मधील दोष, सर्व मलीनता ठीक केली पाहिजे. दुसऱ्यांचे जे दोष आपण पाहतो तेच आपल्यातही असूं शकतात. ते आधीं लक्षांत घेऊन ते दूर करण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे. म्हणजे सर्व कांहीं ठीक होईल. साधू-संत नेहमी आपल्या स्वत:च्या दोषांबद्दल जागरुक असतात. सर्वसाधारण माणूस स्वत:च्या दोषांबद्दल बेफिकीर असतो. कारण त्यांच्याकडे दोष म्हणून तो पहातच नाही (उलट त्यांचे समर्थन करण्याचा प्रयत्न करत रहातो); मग ते दूर करण्याचा विचारही दूरच.

एकदां आपल्या स्वत:मधले दोष लक्षांत घेतले आणि त्यांचा आपल्या प्रगतीमधील अडथळा समजून घेतला की खूप सुधारणा होईल. ध्यानामधून हेच मिळवायचे आहे. श्रीकृष्णांवर ध्यान केल्यावर आपण आंतून स्वच्छ होतो. पण कांही लोक कृष्णाचे दोष दाखवण्यांत धन्यता मानतात. म्हणून स्वत:कडे पाहण्याबद्दल सतर्क राहिले पाहिजे. म्हणजे आपले आपल्याच लक्षांत येते की आपल्यामधेही कांहीं दोष आहेत व ते आपण दूर केलेच पाहिजे. हे सहजयोग्यांसाठीं अत्यंत आवश्यक आहे.श्रीकृष्णांनी हाच उपदेश केला आहे. दुसऱ्यांचे दोष दाखवणारे खूप असतात पण स्वत:मधले दोष स्वत:च ओळखणारे थोडेच असतात. म्हणूनच स्वत:चे दोष जाणणें व त्यांचा विचार करणें फार महत्त्वाचे आहे; म्हणजेच तुमचे चित्त दुसऱ्यांकडे न धावता स्वत:कडे लागले पाहिजे. तरच स्वत:मधें तुम्हाला सुधारणा करता येईल. कधीं कधी तर स्वत:चे दोष समजल्यावर आपणच हैराण होतो.

अशी सुधारणा व स्वच्छता झाली की मनुष्याला एक वेगळेच व्यक्तिमत्व येते. हे रुपच शक्तिमय असल्यामुळे असा माणूस खूप कार्य करुं शकतो. कांहीं जणांना स्वत:चे दोष समजतात पण ते समजूनही दूर करणें जमत नाहीं. त्यासाठीं स्वत:कडे सूक्ष्म नजरे मधून बघितले पाहिजे. असे केल्यावरच सगळी मलीनता दूर होईल.

श्रीकृष्णांचा हाच संदेश आहे की तुम्ही स्वत:मधें डोकावून पहा व स्वत:ला नीट पारखून ओळखा. त्याच्या आड येणारी एकमेव गोष्ट म्हणजे आपला अहंकार. हा अहंकारही एक दुर्गुणच आहे; त्याच्यामुळें आपण आपल्याकडे नीट पाहूं शकत नाहीं.

आजच्या पूजेला मोजकेच लोक उपस्थित आहेत. पण श्रीकृष्णांची पूजा हृदयांतून झाली तर खूप लोक आतून स्वच्छ होतील. हाच श्रीकृष्णांचा संदेश आहे. त्यामधून होणारे आत्म्याचे दर्शन अत्यंत समाधानकारक असते. म्हणून त्यासाठी खूप मेहनत घेतली पाहिजे; सहजयोग्यांनी हे शिकलेच पाहिजे. त्यातून तुमच्यामधें श्रीकृष्णांच्या बाललीलांमधून व्यक्त होणारा निष्पाप भोळेपणा येईल व तुमची नरजही स्थिर होईल.

सर्वांना आशीर्वाद.